

Dr•Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja College Ara
Date; 18/10/2025
Class: U.G Semester - 3rd
(MJC-3)
Developmental Psychology,
Topic - Factors in Development)

विकास में कारक (*Factors in Development*)

मानव एक जटिल जीव प्राणी हैं, इसलिए यह निर्धारित करना चुनौतीपूर्ण है कि कौन से कारक विकास को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। विकास के बायोजनिक, साइकोजेनिक एवं सोसियोजेनिक कारक हैं जो मानव विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिनका वर्णन नीचे किया जा रहा है-

(1) ग्रन्थियाँ (Glands) मानव शरीर में होने वाली जैविक क्रियाओं के नियन्त्रण एवं समन्वय हेतु कुछ ग्रन्थियाँ स्राव करती हैं। ये ग्रन्थियाँ दो प्रकार की होती हैं- i) बहिः सावी ग्रन्थियाँ (Exocrine Glands)- ये नलिका युक्त ग्रन्थियाँ होती हैं

(ii) अन्तःसावी ग्रन्थियाँ (Endocrine Glands)- ये नलिकाविहीन ग्रन्थियाँ होती हैं और अपना स्राव सीधे रक्त में डालती हैं। वस्तुतः कभी-कभी हम बहुत सक्रिय (Active) तथा कभी-कभी निष्क्रिय (Passive) हो जाते हैं व कभी-कभी उदास (Depressed) हो जाते हैं इसका कारण यह है कि शरीर में कुछ ऐसे रासायनिक परिवर्तन होते हैं जिनका नियन्त्रण कुछ ग्रन्थियों द्वारा होता है। उन ग्रन्थियों का वर्णन निम्नलिखित हैं-

(a) पीयूष ग्रन्थि (Pituitary Gland)- इसका स्थान मस्तिष्क में होता है तथा इस ग्रन्थि से अधिक हार्मोन्स (Hormones) स्रावित होने से व्यक्ति के शरीर की लम्बाई अधिक व कम होने से व्यक्ति बौना हो जाता है। इस ग्रन्थि के अग्रभाग से सोमैटोट्रोपिक नामक हार्मोन्स स्रावित होता है। इस हार्मोन्स के सहारे पीयूष ग्रन्थि अन्य ग्रन्थियों जैसे-एड्रीनल ग्रन्थि, गल ग्रन्थि (Thyroid) आदि के कार्यों पर अपना नियंत्रण रखती है।

(b) अधिवृक्क ग्रन्थि (Adrenal Gland)- इस ग्रन्थि का स्थान वृक्क (Kidney) के ऊपर होता है। इसके द्वारा ही व्यक्ति की सांवेगिक स्थिति का नियंत्रण होता है। भय, क्रोध, आदि संवेग में इस हार्मोन्स का अधिक महत्व है, इसलिए इसे आपातकालीन हार्मोन्स (Emergency Hormones) भी कहा जाता है।

(c) गलग्रन्थि (Thyroid Gland) - गलग्रन्थि का व्यक्तित्व पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। इसके नष्ट हो जाने पर श्लेष्मकाय (Myxoedema) नामक रोग हो जाता है। इस रोग में व्यक्ति के शरीर में शिथिलता आ जाती है। मस्तिष्क एवं पेशियों की क्रिया मन्द पड़ जाती है, शरीर पर सूजन आ जाती है, स्मृति मन्द होने लगती है, ध्यान केन्द्रित नहीं हो पाता, चिन्तन करना कठिन हो जाता है। जन्म से ही इस ग्रन्थि के न होने पर बालक की बुद्धि का विकास नहीं हो पाता। जाम्बुक बालक (Cretins), बौने, कुरूप और मूढ़बुद्धि (Imbecile) बालक इसी ग्रन्थि के प्रभाव का परिणाम हैं। इस ग्रन्थि के बहुत अधिक क्रियाशील होने पर व्यक्ति में तनाव, अशान्ति, चिड़चिड़ापन, चिन्ता और अस्थिरता दिखाई पड़ती है। वृद्धि के काल में गलग्रन्थि की क्रिया अधिक होने पर शारीरिक विकास, विशेषतया लम्बाई के विकास में अधिक तेजी दिखाई पड़ती है। इस प्रकार संक्षेप में, गलग्रन्थि की क्रिया की अधिकता और कमी के साथ-साथ शरीर की क्रिया में अधिकता और कमी दिखाई पड़ती है। यद्यपि अन्य प्रभावों के कारण भी शरीर में यही परिवर्तन देखा जा सकता है।

यौन ग्रंथि (**Sex Gland**) इस ग्रंथि के विकास से स्त्रियों में स्त्रियोचित गुणों तथा पुरुषों में पुरुषोचित गुणों का विकास होता है।

(2) आनुवंशिकता (Heredity) आनुवंशिकता माता-पिता से बच्चों में उनके जीन के माध्यम से शारीरिक विशेषताओं का संचरण है। यह शारीरिक बनावट के सभी पहलुओं जैसे ऊंचाई, वजन, शरीर की संरचना, आंखों का रंग, बालों की बनावट और यहाँ तक कि बुद्धि और योग्यता को प्रभावित करता है। हृदय रोग, मधुमेह, मोटापा आदि जैसी बीमारियों और स्थितियों को भी जीन के माध्यम से पारित किया जा सकता है, जिससे बच्चे के वृद्धि एवं विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(3) पोषण (Nutrition)-बालक के विकास का एक अन्य प्रभावी कारक उचित पोषण है। क्योंकि शरीर को खुद को बनाने और मरम्मत करने के लिए जो कुछ भी चाहिए वह हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन से आता है। अतः पोषण का बालक के विकास पर पूरा-पूरा प्रभाव पड़ता है। उचित पोषण से बालक का शारीरिक एवं मानसिक विकास उचित ढंग से होता है। बालक के लिए सिर्फ भोजन ही पर्याप्त नहीं है बल्कि उस भोजन में उचित सन्तुलित पोषण का होना भी अनिवार्य है। सन्तुलित पोषण तत्वों को ग्रहण करने से बालक शारीरिक रूप से सुदृढ़ होते हैं और मानसिक रूप से भी उनका विकास उचित रूप से होता है। कुपोषण कमी से होने वाली बीमारियों का कारण बन सकता है जो बच्चों की वृद्धि और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। दूसरी ओर, अधिक खाने से मोटापा और लंबे समय में स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं, जैसे मधुमेह और हृदय रोग। मस्तिष्क और शरीर के विकास के लिए विटामिन, खनिज, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और वसा से भरपूर संतुलित आहार आवश्यक है।

(4) लिंग भेद (Sex Difference) - लिंग भेद भी बालक के विकास को प्रभावित करने वाला एक प्रभावशाली कारक है। लड़के और लड़कियाँ अलग-अलग तरीकों से बढ़ते हैं, खासकर युवावस्था के करीब। इसका प्रभाव बालक के शारीरिक तथा मानसिक विकास पर पड़ता है। लड़के लड़कियों की तुलना में लंबे और शारीरिक रूप से मजबूत होते हैं।

अध्ययन में यह देखा गया कि जन्म के समय बालक का आकार, बालिकाओं की अपेक्षा बड़ा होता है परन्तु बाद में बालिकाओं का शारीरिक विकास बालकों की अपेक्षा तीव्र गति से होता है। बालकों का मानसिक विकास, बालिकाओं की अपेक्षा देर से होता है। बालिकाओं में यौन-परिपक्वता भी बालकों की अपेक्षा जल्दी आती है। उनके शरीर की शारीरिक संरचना में भी अंतर होता है जो लड़कों को अधिक पुष्ट और उन गतिविधियों के लिए उपयुक्त बनाता है जिनमें शारीरिक कठोरता की आवश्यकता होती है। उनका स्वभाव भी अलग-अलग होता है, जिससे वे अलग-अलग चीजों में रुचि दिखाते हैं।

(5) हार्मोन (Hormones)- हार्मोन अंतःस्रावी तंत्र से संबंधित हैं और हमारे शरीर के विभिन्न कार्यों को प्रभावित करते हैं। वे विभिन्न ग्रंथियों द्वारा निर्मित होते हैं जो शरीर के विशिष्ट भागों में स्थित होते हैं जो शरीर के कार्यों को नियंत्रित करने वाले हार्मोन को स्रावित करते हैं। बच्चों में सामान्य शारीरिक वृद्धि और विकास के लिए उनका समय पर कार्य करना महत्वपूर्ण है। हार्मोन स्रावित ग्रंथियों के कामकाज में असंतुलन के परिणामस्वरूप विकास दोष, मोटापा, व्यवहार सम्बन्धी समस्याएं और अन्य बीमारियां हो सकती हैं। यौवन के दौरान, गोनाड सेक्स हार्मोन का उत्पादन करते हैं जो यौन अंगों के विकास तथा लड़कों और लड़कियों में माध्यमिक यौन विशेषताओं की उपस्थिति को नियंत्रित करते हैं।

(6) बुद्धि (Intelligence) बालक के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों में बुद्धि का महत्वपूर्ण स्थान है। बुद्धि का बालक के विकास पर अधिक एवं महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। कुशाग्र बुद्धि वाले बालकों का शारीरिक एवं मानसिक विकास तीव्र गति से होता है जबकि मन्द बुद्धि के बालकों का मानसिक विकास मन्द गति से होता है। मन्द बुद्धि के बालकों का शारीरिक विकास भले ही हो जाए किन्तु उनका सामाजिक, नैतिक, मानसिक एवं

संवेगात्मक विकास की गति अत्यन्त धीमी रहती है। कुशाग्र बुद्धि के बालक शीघ्र ही चलना एवं बोलना सीख लेते हैं वहीं मन्द बुद्धि बालक देर से चलना व बोलना सीख पाते हैं।

टरमन ने अपने अध्ययन (जिसमें बालक के पहली बार बोलने और चलने का अध्ययन किया) के माध्यम से यह निष्कर्ष निकाला कि 13 वें मास में चलने वाले बालक प्रखर बुद्धि, 14 वें मास में चलने वाले सामान्य बुद्धि, 22 वें मास में चलने वाले मन्द बुद्धि और 23 वें मास में चलने वाले बालक मूढ़ होते हैं इसी प्रकार बोलने की प्रक्रिया में क्रमशः 11, 16, 34, 51 मास वाले बालक प्रखर बुद्धि, सामान्य, मन्द एवं मूढ़ बुद्धि वाले थे।

(7) पर्यावरण (Environment)- पर्यावरण बच्चों के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और यह बच्चे को प्राप्त होने वाली शारीरिक और मनोवैज्ञानिक उत्तेजना के कुल योग का प्रतिनिधित्व करता है। प्रारंभिक बचपन के विकास को प्रभावित करने वाले कुछ पर्यावरणीय कारकों में बच्चे के रहने का स्थान के भौतिक परिवेश और भौगोलिक परिस्थितियों के साथ-साथ उसका सामाजिक वातावरण और परिवार और साथियों के साथ सम्बन्ध भी शामिल हैं। यह समझना आसान है कि एक अच्छी तरह से पोषित बच्चा वंचित से बेहतर करता है। जिस वातावरण में बच्चे रहते हैं, वह वातावरण उसके विकास में योगदान देता है।

(8) शुद्ध जल, वायु एवं प्रकाश (Pure Water, Air and Light)- शुद्ध जल, वायु एवं प्रकाश भी बाल विकास के महत्वपूर्ण कारक हैं। जीवन के आरम्भिक दिनों में बालक को शुद्ध वायु तथा प्रकाश (धूप) की नितान्त आवश्यकता होती है। शुद्ध जल, वायु एवं प्रकाश के अभाव में जीवन की कल्पना करना भी मुश्किल है। इससे उनका शारीरिक एवं मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है।

(9) प्रजाति (Race) प्रजाति भी बालक के विकास को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। क्लिनबर्ग का मत है कि बुद्धि की श्रेष्ठता का कारण प्रजाति है। यही कारण है कि अमेरिका की श्वेत प्रजाति, नीग्रो प्रजाति से श्रेष्ठ है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि यूरोप की तुलना में भूमध्यसागरीय प्रदेशों के बालकों का शारीरिक विकास तीव्र गति से होता है।

(10) आर्थिक स्थिति (Economic Conditions) - बालक के विकास का अन्य प्रभावशाली कारक परिवार की आर्थिक स्थिति भी है। सम्पन्न परिवार के बालक मानसिक रूप से पूर्णतः सन्तुष्ट रहते हैं जिस कारण उनका समुचित शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। इसके ठीक विपरीत आर्थिक रूप से कमजोर बालक स्वयं से असन्तुष्ट रहते हैं और उनके मानसिक एवं शारीरिक विकास की गति धीमी रहती है।

(11) व्यायाम और स्वास्थ्य (Exercise and Health)- यहाँ व्यायाम शब्द का अर्थ एक अनुशासन के रूप में शारीरिक व्यायाम या जानबूझकर शारीरिक गतिविधियों में संलग्न होना नहीं है, यह जानते हुए कि इससे उन्हें बढ़ने में सहायता मिलेगी। यहां व्यायाम सामान्य खेल समय और खेल गतिविधियों को संदर्भित करता है जो शरीर को मांसपेशियों की ताकत में वृद्धि करने और हड्डी के द्रव्यमान को बढ़ाने में सहायता करता है। उचित व्यायाम बच्चों को अच्छी तरह से बढ़ने और समय पर या जल्दी से मील के पत्थर तक पहुंचने में सहायता करता है। व्यायाम भी उन्हें स्वस्थ रखता है और प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करके बीमारियों से लड़ता है, खासकर अगर वे बाहर खेलते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि बाहरी खेल उन्हें रोगाणुओं के संपर्क में लाते हैं जो उन्हें प्रतिरोध बनाने और एलर्जी को रोकने में सहायता करते हैं।

(12) पारिवारिक प्रभाव (Familial Influence) - एक बच्चे के पालन-पोषण और उन तरीकों को निर्धारित करने में परिवारों का सबसे गहरा प्रभाव पड़ता है जिसमें वे मनोवैज्ञानिक और सामाजिक रूप से विकसित होते हैं। चाहे उनका पालन-पोषण उनके माता-पिता, दादा-दादी या पालक देखभाल द्वारा किया गया हो, उन्हें स्वस्थ कार्यात्मक व्यक्तियों के रूप में विकसित होने के लिए बुनियादी प्यार, देखभाल और शिष्टाचार की आवश्यकता होती है। सबसे सकारात्मक वृद्धि तब देखी जाती है जब परिवार गतिविधियों के माध्यम से बच्चे के विकास में समय, ऊर्जा

और प्यार लगाते हैं, जैसे कि उन्हें पढ़ना, उनके साथ खेलना और गहरी सार्थक बातचीत करना। जो परिवार बच्चों के साथ दुर्यवहार या उपेक्षा करते हैं, उनका सकारात्मक विकास प्रभावित होगा। ये बच्चे ऐसे व्यक्तियों के रूप में समाप्त हो सकते हैं जिनके पास खराब सामाजिक कौशल हैं और वयस्कों के रूप में अन्य लोगों के साथ सम्बन्ध बनाने में कठिनाई होती है।